चन्दनषष्ठी+रोहिणी
(प्रतिक्रमण विधान)
एवं
रविव्रत विधान

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य
नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती
अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता
बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना

vidya suvrat sangh
vidya ke suvratsagar

कृति	:	चन्दनषष्ठी+रोहिणी एवं रविव्रत विधान
आशीर्वाद	:	आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	पावन वर्षायोग 2024, दमोह
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	40/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अरिहंत जैन (गोलू), सागर मोबाइल-8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक परिवार

स्व. श्री हुकुमचंदजी एवं स्व. श्रीमती शांतिबाई की स्मृति में

श्री देवेन्द्र-श्रीमती सुनीता, श्री विनोद-श्रीमती रजनी, श्री विमल-श्रीमती ज्योति, श्री राजीव-श्रीमती रूबी, लवली, आयुषी, विज्ञप्त, प्राशू, प्राशी, गुणांश, ग्रंथ एवं समस्त वैरागी परिवार बबीना कैंट झाँसी

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

सांसारिक अवस्था में दैनिक कार्य करते हुए चर्या में अनेक दोष लग जाते हैं जिनके निवारण करने के लिए भगवान की भक्ति ही सहारा है जिसके माध्यम से हम अपने लगे दोषों का निवारण करके प्रायश्चित्त कर सकते हैं। भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति '**चन्दनषष्ठी विधान**' हम सबको दिया है जिसमें 8 अर्घ्यावली में 48 अर्घ्य, 8 पूर्णार्घ्य तथा एक सम्पूर्णार्घ्य सहित कुल 57 अर्घ्यों के साथ आराधना की गई है जो कि भक्तों के दोषों का निवारण करके मासिक या वार्षिक प्रतिक्रमण के रूप में अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाली है। अतः इस विधान को प्रतिक्रमण विधान के रूप में भी कर सकते हैं।

हर माह रोहिणी नक्षत्र में राहिणी व्रत के दिन यह '**रोहिणी विधान**' करके धर्मध्यान करते हुए अपनी आत्मकल्याण कर सकते हैं। यह व्रत पाँच वर्ष में पूर्ण होता है।

प्रतिवर्ष आषाढ़ मास से लगातार नौ रविवार को रविव्रत किया जाता है उसमें यह '**रविव्रत विधान**' करके पूजन आराधना कर सकते हैं। यह व्रत नौ वर्ष में पूर्ण होता है।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा॰ ब्र॰ संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥
तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥
तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥
तेरा...

❑❑❑

नित्यपूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
ऐसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्ट(नाथ)महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्त्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी-विरचित-तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य-विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे मुनिराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥२॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गान्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य-यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ-धान्योपम-मेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्-मतिज्ञान-बलाद्धहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥
जंघानलश्रेणि-फलांबु-तंतु - प्रसून - बीजांकुर - चारणाह्वाः।
नभोऽगणस्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धि-मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा, दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधुस्त्रवंतोऽप्यमृतं स्त्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

आलोचना से
लोचन खुलते सो
स्वागत है

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिए हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय नवदेव समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय नवदेवेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य (अवतार)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥

अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री समयसागरजी महाराज का अर्घ्य (शंभु)

आचार्य श्री के लघुनंदन, पहले निर्यापक श्रमण मुनि।
जो मूलाचार निभाकर के, श्री समयसार से आत्म गुणी॥
श्री शांति वीर शिव ज्ञान तथा, विद्यागुरु जैसे श्रद्धालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं नवाचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥१॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥२॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥३॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥४॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥५॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥६॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥७॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥८॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

चंदनषष्ठी विधान	पेज नं. 21
रोहिणी विधान	पेज नं. 41
रविव्रत विधान	पेज नं. 49

चंदनषष्ठी विधान मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...। -४

(जोगीरासा)

वर्तमान की चौबीसी में, चन्द्रप्रभु जी प्यारे।
जगह-जगह पर जिनके अतिशय, रहे जिनालय न्यारे॥
जिनकी चर्चा आज विश्व में, सबके मुख पर होती।
जो चट्टान चटक कर चमके, जला रहे जिन-ज्योति॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

श्री चैतन्य चिदातम के जो, चन्द्रोदय हैं साँचे ।
जिनकी महा कृपा करुणा से, खुशियों से जग नाँचे ॥
जो ज्ञानामृत की वर्षा से, दुख संताप मिटाते।
पुण्य चन्द्रमा को विकसित कर, कर्म-कलंक नशाते॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

चन्द्रपुरी के चाँद चकोरे, हम सबके भगवान् रे।
चाँदी जैसा रंग है जिनका, चाँदी जैसा नाम रे॥
चाँदी-चाँदी सबकी करते, हम तो करें प्रणाम रे।
चारु चन्द्र सम हम भी चमकें, पाकर आतमराम रे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
चन्द्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

चंदनषष्ठी विधान प्रारम्भ

जय बोलिए चन्द्रपुरी के छोरे, सकल परिग्रह छोड़े, चैतन्य चन्द्रोदय के चाँद चकोरे, प्रभु जी गोरे-गोरे, चाँद सितारे जिन्हें देखकर शर्माएँ, जिनकी भक्ति को सब सिर झुकाएँ ऐसे परमपूज्य श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की जय॥

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हर्षे॥
नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शान्ति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल-खेल में, गई जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम-मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चंदन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख-सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कान्ति भी अद्भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगन्धी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आए चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम अर्घ्यावली

श्रावक षट्-आवश्यक दोष शुद्धि अर्घ्य

(हाकलिका)

जिन पूजा के दोष सभी, दूर करें हम अभी अभी।
करके नमोऽस्तु चंदा को, ऋद्धि सिद्धि आनंदा हो॥

ॐ ह्रीं देव पूजा निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

गुरु सेवा के दोष सभी, दूर करें हम अभी अभी।
करके नमोऽस्तु चंदा को, ऋद्धि सिद्धि आनंदा हो॥

ॐ ह्रीं गुरूपास्ति निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अध्यापन के दोष सभी, दूर करें हम अभी अभी।
करके नमोऽस्तु चंदा को, ऋद्धि सिद्धि आनंदा हो॥

ॐ ह्रीं शास्त्र स्वाध्याय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

व्रत संयम के दोष सभी, दूर करें हम अभी अभी।
करके नमोऽस्तु चंदा को, ऋद्धि सिद्धि आनंदा हो॥

ॐ ह्रीं संयम निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तप साधन के दोष सभी, दूर करें हम अभी अभी।
करके नमोऽस्तु चंदा को, ऋद्धि सिद्धि आनंदा हो॥

ॐ ह्रीं तप निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

त्याग दान के दोष सभी, दूर करें हम अभी अभी।
करके नमोऽस्तु चंदा को, ऋद्धि सिद्धि आनंदा हो॥

ॐ ह्रीं दान निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

यदि श्रावकों के कर्म में कुछ, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं श्रावक षट्-आवश्यक निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय प्रथम पूर्णार्घ्यं...।

द्वितीय अर्घ्यावली

श्रमण षट्-आवश्यक दोष शुद्धि

(अर्द्ध अडिल्ल)

मुनि समता में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं सामायिक निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जिन स्तुति में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं जिन स्तुति निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जिन वंदन में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं जिन वंदना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाप त्याग में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रतिक्रमण में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कायोत्सर्गम् अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

यदि साधुओं के कर्म में कुछ, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं मुनि-श्रमण षट्-आवश्यक निमित्त दोष निवारणाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय द्वितीय पूर्णार्घ्यं...।

तृतीय अर्घ्यावली

जिन नवदेवता दोष शुद्धि अर्घ्य

(अर्द्ध अडिल्ल)

अरिहंतों में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं अरिहंत देव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सिद्ध देव में अगर हुआ कुछ, दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं सिद्ध देव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आचार्यों में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं आचार्य देव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उपाध्याय में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं उपाध्याय देव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

साधु जनों में अगर हुआ कुछ दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं साधु देव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

धर्म ग्रंथ प्रतिमा मंदिर में दोष हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु शुद्धि हो॥

ॐ ह्रीं जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

नव देवताओं में अगर कुछ, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं जिन नव देवता निमित्त दोष निवारणाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय तृतीय पूर्णार्घ्यं...।

चतुर्थ अर्घ्यावली

षट्काय जीव विराधना दोष शुद्धि अर्घ्य

(अर्द्ध जोगीरासा)

पृथ्वी जल वा अगन पवन तरु, एकेन्द्रिय के सारे।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, सारे दोष नशा रे॥

ॐ ह्रीं पंच स्थावर एकेन्द्रिय जीव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जोंक शंख लट इत्यादिक जो, दो इन्द्री के सारे।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, सारे दोष नशा रे॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जीव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चींटी बिच्छू इत्यादिक जो, त्रय इन्द्री के सारे।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, सारे दोष नशा रे॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय जीव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मक्खी मच्छर इत्यादिक जो, चउ इन्द्री के सारे।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, सारे दोष नशा रे॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जीव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तोता और सर्प इत्यादि, बिन मन वाले सारे।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, सारे दोष नशा रे॥

ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रियजीव निमित्तदोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सुर नर देव नरक इत्यादि, पंचेन्द्रिय के सारे।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, सारे दोष नशा रे॥

ॐ ह्रीं संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

षट् काय जीवों में अगर कुछ, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं षट्कायजीव निमित्तदोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय चतुर्थ पूर्णार्घ्यं...।

पंचम अर्घ्यावली

पंच सूना दोष शुद्धि अर्घ्य

(चौपाई)

गृह के कार्य गृहस्थी में जो, खण्ड खण्ड में पाप हुआ हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं खंडन सूना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौका कार्य गृहस्थी में जो, चक्की पीसन पाप हुआ हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पीसन सूना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चूल्हा आग गृहस्थी में जो, ईंधन वाला पाप हुआ हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं चूल्हा सूना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नीर घिंनौची गृहस्थी में जो, पानी वाला पाप हुआ हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं जल सूना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

झाड़ू पौछा बर्तन में जो, गृहस्थी वाला पाप हुआ हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं प्रमार्जनी सूना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

घर गृहस्थी आरंभों में जो, नव कोटी से पाप हुआ हो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं आरंभादि सूना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

गृह पंच सूनों में अगर कुछ, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं पंचसूना निमित्त दोष निवारणाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पंचम पूर्णार्घ्यं...।

षष्ठम अर्घ्यावली

श्रावक प्रतिमा (बारह व्रत) दोष शुद्धि अर्घ्य

(चौपाई)

श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ, यदि दूषित हमसे हो जाएँ।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रावक प्रतिमा निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावक के बारह व्रत जो हैं, अगर दोष कुछ हमसे हो हैं।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रावक द्वादश व्रत निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावक के पाँचों अणुव्रत में, अगर दोष कुछ हों जिनपथ में।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रावक पाँच अणुव्रतनिमित्तदोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावक के तीनों गुणव्रत जो, जिनमें लगें दोष यदि कुछ तो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रावक त्रय गुणव्रत निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चारों शिक्षा व्रत श्रावक के, जिनमें लगें दोष के धक्के ।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रावक चतुःशिक्षा व्रत दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावक की सल्लेख समाधि, हमसे दोष लगी कुछ व्याधि।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, दोष शुद्धि को करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रावक समाधि निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

प्रतिमा व्रतों के धर्म में कुछ, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥

करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं श्रावक प्रतिमा व्रत निमित्त दोष निवारणाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय षष्ठम पूर्णार्घ्यं...।

सप्तम अर्घ्यावली

क्रोध-मान-माया-लोभ-राग-द्वेष दोष शुद्धि अर्घ्य

(अर्द्ध विष्णु)

क्रोध कषायों के दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मान कषायों के दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मान कषाय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माया कषाय के दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं माया कषाय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

लोभ कषायों के दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं लोभ कषाय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

राग दलदलों के दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं राग कषाय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

द्वेष दुश्मनों के दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं द्वेष कषाय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

यदि क्रोध आदि से अशुद्धि, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं क्रोधादि कषाय निमित्त दोष निवारणाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय सप्तम पूर्णार्घ्यं...।

अष्टम अर्घ्यावली

अन्य दोष शुद्धि अर्घ्य (अर्द्ध विष्णु)

द्रव्यादिक निमित्त दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं द्रव्यादि निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रमाद आदि निमित्त दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं प्रमादादि निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भय आशा निमित्त दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं भय-आशा-स्नेहादि-निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तीन मूढ़ता हेतु दोष को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं देव-लोक-गुरुमूढ़ता निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

रत्नत्रय निमित्त दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आसादना निमित्त दोषों को, नष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आसादना निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

यदि अन्य हेतु से अशुद्धि, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

ॐ ह्रीं अन्य हेतु निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टम पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

कोई अशुद्धि हेतुओं से, दोष या अपराध जो।
हम से हुए अज्ञान से या, मोह से भी पाप जो॥
करके नमोऽस्तु चाहते हम, वे क्षमा सब कीजिए।
हे चंद्रनाथ जिनेन्द्र हमको, शुद्धि निज सम दीजिए॥

(दोहा)

यों सत्तावन अर्घ्य ले, भजें चन्द्रप्रभु नाथ।
'सुव्रत' हरने दोष सब, हैं नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्ण अशुद्धि निमित्त दोष निवारणाय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

चंदनषष्ठी व्रत कथा, अब कहते धर ध्यान।
करके नमोऽस्तु हम भजें, चंद्रप्रभु भगवान॥
नमोऽस्तु कर नव देव को, करके पूज्य विधान।
चंदनषष्ठी की करें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

अगर व्रतों में दोष लगें या, शुद्धाशुद्ध अवस्था हो।
व्रत पालन में घबराहट हो, या फिर मोह व्यवस्था हो॥
तो ऐसे में चंदनषष्ठी, व्रत पालन कर सुनो कथा।
मोह त्याग कर मोक्ष मिलेगा, भागेगी दुख दर्द व्यथा॥१॥
वीरसेन उज्जैन नगर का, राजा रानी वीरमती।
जहाँ सेठ जिनदत्त नाम का, सेठानी थी जयावती॥
जिनका ईश्वरचंद्र पुत्र था, और चंदना पुत्रवधू।
बने सेठ सेठानी त्यागी, राजा रानी पुत्रवधू॥२॥
तब अतिमुक्तक नामक मुनिवर, जो मासिक उपवासी थे।
नगरी में आहार हेतु वे, आए मुनि संन्यासी थे॥
तब तो ईश्वरचंद्र पत्नि से, कहे लगाओ चौका जी।
मुनिवर को आहार दान दें, क्यों छोड़ें ये मौका जी॥३॥
कहे चंदना मैं ऋतुमति हूँ, मैं आहार न दे सकती।
पति बोला चुपचाप रहो तुम, ऐसे ही करना भक्ति॥
अतः चंदना ने ऋतुमति हो, मुनिवर को आहार दिए।
मुनिवर तो आहार ग्रहण कर, वन को गए विहार किए॥४॥
यहाँ तीन दिन बाद देखिए, गुप्त पाप का उदय हुआ।
पति-पत्नी दोनों के तन में, गलित कुष्ठ का रोग हुआ॥
सो दोनों अत्यंत दुखी हो, रोकर समय बिताते हैं।

तब उज्जैन नगर में मुनिवर, श्रीभद्र जी आते हैं॥५॥
मुनि दर्शन को गए नगरजन, साथ-साथ दोनों जाते।
बैठ गवासन नमोऽस्तु करके, व्यथा कथा निज बतलाते॥
पाप उदय के क्षय करने का, सम्यक् मार्ग दिखा देना।
दोष-पाप-अपराध क्षमा हों, श्रद्धा जोत जला देना॥६॥
बोले मुनिवर गुप्त पाप कर, पात्र दान का लोप किया।
अशुद्ध होकर शुद्ध बताकर, मुनिवर को आहार दिया॥
फलस्वरूप यह हुई वेदना, यह सुन दोनों दुखी हुए।
मुनिवर से उपचार पूछने, पति-पत्नी करबद्ध हुए॥७॥
मुनिवर ने उपचार बताया, भाद्रबदी की षष्ठी को।
चार तरह आहार त्याग कर, करो भक्ति तज भुक्ति को॥
णमोकार की माला फेरो, चार तरह का दान करो।
तीनों संध्या सामायिक कर, विषय कषायें त्याग करो॥८॥
छह वर्षों तक यह व्रत करके, फिर उद्यापन करवाना।
मंदिर ना हो जहाँ वहाँ पर, आप जिनालय बनवाना॥
छह जिनबिम्ब विराजित करना, छह मंदिर उद्धार करो।
छह शास्त्रों का ज्ञान दान कर, चार तरह का दान करो॥९॥
इस विध मुनि से व्रत विधि जानी, व्रत लेकर के पाल गए।
पाप गए तन स्वस्थ हुए फिर, आयु पूर्ण कर स्वर्ग गए॥
स्वर्ग त्यागकर राजा बनकर, मुनि बन मोक्ष गए राजा।
रानी आगे मोक्ष जाएगी, ऐसा बोले मुनिराजा॥१०॥
चंदन षष्ठी का यह व्रत तो, नर नारी जो पालेगा।
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि पाकर, सर्वोत्तम पद पा लेगा॥
शुद्धाशुद्ध दोष सब हरने, चंदन षष्ठी व्रत पालो।
चंद्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, 'विद्या-सुव्रत' गुण गालो॥११॥

(दोहा)

चंदन षष्ठी व्रत करो, हरने को अपराध।
चंद्रप्रभु से चाहते, 'सुव्रत' आशीर्वाद॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑❑❑

आरती

(तर्ज : करें भगत् हो आरती.....)

चन्द्रप्रभु की आरती करो झूम-झूम के[२]
झूम-झूम के.....[४]
महासेन माँ - लक्ष्मणा के सुत न्यारे,
चन्द्रपुरी के लाल चन्द्रमा से प्यारे।
सबके नाथ तुम्हें हम पूजें झूम-झूम के[२],
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

ललितकूट सम्मेदशिखर खड्गासन से,
मोक्ष पधारे अष्ट कर्म के नाशन से।
शरणा दे दो नाथ आए हम घूम-घूम के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

आप जगत् में साँचे हो हीरे मोती,
सूर्य चाँद से तेज आपकी है ज्योति।
नाम सुनत ही भक्त नाचते झूम-झूम के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

जगह-जगह पर अतिशय खूब तुम्हारा है,
समंतभद्र को चमत्कार कर तारा है।
भूत पिशाच भगे चंदा नाम सुन-सुन के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

नाथ! आपकी कृपा दशहरा दीवाली,
चरण धूल सब दुख संकट हरने वाली।
'सुव्रत' पा वरदान रहें हम झूम-झूम के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

❑❑❑

आलोचना पाठ

(दोहा)

चौबीसों प्रभु को नमूँ, परमेष्ठी जिनराज।
कर लूँ निज आलोचना, आत्म शुद्धि के काज॥१॥

(सखी)

हे परम दयालू भगवन्, मैं करके नमोस्तु दर्शन।
चरणों में अरज लगाऊँ, कैसे निज दोष नशाऊँ॥२॥
मैं होकर क्रोधी मानी, कपटी लोभी अज्ञानी।
दिन भर चर्या करने में, आना-जाना करने में॥३॥
पढ़ने-लिखने लड़ने में, निंदा ईर्ष्या करने में।
सुख-दुख रोने-हँसने में, या छींक जँभाई खांसी में॥४॥
सोने-जगने सपने में, मल-मूत्र थूक तजने में।
चूल्हा चक्की चौका में, बर्तन झाड़ू पौंछा में॥५॥
भोजन जल-बिलछानी में, धोने व न्हवन पानी में।
शैम्पू सोड़ा साबुन में, फैशन अंजन-मंजन में॥६॥
या टी. व्ही. मोबाइल में, या नेट मनोरंजन में।
कृषि नौकरी धंधे में, जो हुए व्यसन अंधे में॥७॥
या दवा कीटनाशक में, बिजली मकान पावक में।
हिंसा असत्य चोरी में, अब्रह्म परिग्रह ही में॥८॥
फल पंच उदम्बर खाके, या मद्य-माँस-मधु पाके।
जो नहीं मूलगुण धारे, बाईस अभक्ष्य अहारे॥९॥
या नित्य देव दर्शन में, या कभी रात्रि भोजन में।
जल पिया कभी अनछाना, त्रय कुलाचार न जाना॥१०॥
जो लेकर नियम न पाले, प्रतिकूल धरम के चाले।
या देव-शास्त्र-गुरुओं में, या अपने या औरों में॥११॥
मैंने कर पापाचारी, जो करुणा ना हो धारी।
उससे जो जीव मरे हों, या पीड़ित घात करे हों॥१२॥
या पर से पाप कराये, या अनुमोदन मन भाये।
वह मन-वच-तन के द्वारे, टल जायें कषाय सारे॥१३॥
पच्चीस दोष दर्शन के, या ज्ञान चरित आगम के।

दिन रात कभी भी कैसे, जाने अनजाने जैसे॥१४॥
जो पाप हुये हों मुझसे, प्रभु आप बचालो उनसे।
धिक्! धिक्! धिक्क ारो मुझको, प्रभु क्षमादान दो मुझको॥
सीता द्रोपदि या मैंना, या अंजन चंदन मैं ना।
पर नाथ! भक्त तेरा हूँ, सो शुद्धि आप सम चाहूँ॥१६॥
बस बोधि समाधि हो मेरी, हो छत्रच्छाया तेरी।
कर 'सुव्रत' अब ना देरी, प्रभु! शरण न छूटे तेरी॥१७॥

(दोहा)

वीतराग निर्दोष हैं, परमेष्ठी जिनराज।
बन जाऊँ निर्दोष मैं, सो नमोस्तु हो आज॥

❑❑❑

लघु प्रतिक्रमण

हे भगवन्!, हे जिनेन्द्र देव!, हे अरिहंत प्रभु! हे पंचपरमेष्ठी! हे नव देवता भगवन्! आपके श्री चरणों में बारम्बार नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!

हे भगवन्! मैंने अब तक जितने भी पाप, अपराध, दोष किए हों या जाने-अनजाने में हो गए हों उन सभी दोषों का क्षमायाचनापूर्वक प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ।

हे भगवन्! पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक रूप एकेन्द्रिय, द्वि-इन्द्रिय, त्रि-इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-संज्ञी पंचेन्द्रिय आदि त्रस-स्थावर किसी भी जीव का घात किया हो, कराया हो, करने वाले की अनुमोदना की हो, मन-वचन-काय से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! हिंसा-झूठ-चोरी-कुशील-परिग्रह रूप पाँच पापों में, जुआ-माँसभक्षण-मद्यपान-शिकार-चोरी-परस्त्रीसेवन-वेश्यागमन रूप सप्त व्यसनों में, क्रोध-मान-माया-लोभपूर्वक, मन-वचन-काय- समरम्भ-समारम्भ-आरम्भ-कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! मद्य-माँस-मधुत्याग एवं पंच उदम्बर फलों के त्याग रूप अष्टमूलगुण का पालन करते हुए मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! तीन कुलाचार का पालन करते हुए देवदर्शन करने में-रात्रिभोजन त्याग में, पानी छानने की विधि में मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! वीतरागी देव-जिनशास्त्र-दिगम्बर गुरु, पंचपरमेष्ठी, नवदेवताओं की विनय करने में प्रमाद वश, अज्ञानतावश मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! मेरे द्वारा दिन भर में आने-जाने में, उठने-बैठने में, खाने-पीने में, बोलने-चालने में, रखने-उठाने में, लेने-देने में, सोने-जागने में, पढ़ने-लिखने में, घर-गृहस्थी के कार्यों में, नौकरी-धंधे में, खेती-वाड़ी में, भवन-वास्तु में, टी.व्ही.-मोबाइल-कम्प्यूटर आदि भौतिक साधनों के प्रयोग में और भी जो जाने-अनजाने में प्रमाद वश, अज्ञानतावश, मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

मैं अपने समस्त प्रत्यक्ष-परोक्ष दोषों की आलोचना करता हूँ, निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ, प्रतिक्रमण करता हूँ, प्रायश्चित्त करता हूँ, कायोत्सर्ग करता हूँ। (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

हे भगवन्! जब तक मुझे मोक्ष की प्राप्ति ना हो तब तक आपके चरणकमल मेरे हृदय में मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे ऐसी भावना भाता हूँ।

हे भगवन्! मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति हो, सुगति गमन हो, समाधिमरण हो, जिनगुण की प्राप्ति हो, ऐसी मेरी भावना है।

अंत में यही भावना भाता हूँ—

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निज मंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥

❑ ❑ ❑

चन्दनषष्ठी व्रत कथा

(दोहा)

देव नमों अरिहंत नित, वीतराग विज्ञान।
चन्दनषष्ठी व्रत कथा, कहूँ स्व-पर हित मान॥

काशी देश में वाराणसी (बनारस/काशी) नाम का प्रसिद्ध नगर है जिसे सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् एवं तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान् ने अपने शुभ जन्म से पवित्र किया था। उसी नगर में किसी समय एक सूरसेन नाम का राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम पद्मिनी था ।

एक दिन राजा सभा में बैठा था कि वनपाल ने आकर छह ऋतुओं के फल-फूल लाकर राजा को भेंट किए। राजा इस शुभ भेंट से केवली भगवान का शुभागमन जानकर स्वजन और पुरजनों सहित वंदना को गया । भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणा दे नमस्कार करके बैठ गया।

श्री मुनिराज ने प्रथम ही मुनिधर्म और उसके पश्चात् श्रावक धर्म का उपदेश दिया। उसमें भी सर्वप्रथम सब धर्मों के मूल सम्यग्दर्शन का उपदेश इस प्रकार से दिया कि वस्तु स्वरूप का यथार्थ श्रद्धान् हुए बिना सब ज्ञान और चारित्र निष्फल हैं। यह वस्तु स्वरूप का श्रद्धान् सत्यार्थदेव (अरिहंत), सत्यार्थ (निर्ग्रन्थ/मुनि) गुरु और दयामय (जिनप्रणीत) धर्म में आस्था रखने से ही होता है अतएव प्रथम ही परीक्षापूर्वक इनका श्रद्धान् होना आवश्यक है। तत्पश्चात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच व्रत एकदेश पालन करें तथा इन्हीं के यथोचित पालनार्थ सप्तशीलों (तीनों गुणव्रत वा चार शिक्षाव्रतों) का पालन करें, इत्यादि उपदेश दिया। तब राजा ने हाथ जोड़कर पूछा- हे ऋषिराज ! अपनी रानी के प्रति मेरा अत्यधिक स्नेह होने का कारण क्या है? यह सुनकर गुरुरूप श्री मुनि महाराज ने कहा-हे! राजन् सुनो-

अवन्ती देश में एक उज्जैन नाम का नगर है। वहाँ वीरसेन नाम का राजा था और उसकी रानी का नाम वीरमती था। इसी नगर में जिनदत्त नामक एक सेठ थे। उसकी जयावती नामक सेठानी से ईश्वरचन्द्र नाम का एक पुत्र भी था जो अपने मामा की सुपुत्री चंदना से पाणिग्रहण कर सुख से काल/जीवन यापन करता था।

एक समय जिनदत्त सेठ और जयावती सेठानी कुछ कारण पाकर दिगम्बरी दीक्षा ग्रहणकर मुनि आर्यिका हो गए और तप से आयु पूर्ण होने पर तप के माहात्म्य से स्वर्ग में देव व देवी हुए। पिता का पद प्राप्त कर ईश्वरचन्द्र सेठ भी सुख से रहने लगा।

एक दिन अतिमुक्तक नाम के मुनिराज मासोपवास के अनन्तर नगर में पारणा हेतु पधारे। तब ईश्वरचन्द ने भक्तिसहित मुनिराज को पड़गाहन कर अपनी धर्मपत्नी से कहा कि श्री गुरुदेव को आहार देओ। तब चन्दना बोली- स्वामिन् ! मैं ऋतुमती(अशुद्धि से) हूँ, मैं आहार कैसे दे सकती हूँ?

ईश्वरचंद्र ने कहा- चुप रहो, शोर मत मचाओ। गुरुदेव मासिक उपवासी हैं इसलिए शीघ्र पारणा कराओ। चन्दना ने पति के वचनानुसार मुनिराज को उसी अवस्था में आहार दे दिया। श्री मुनिराज तो आहार करके वन में चले गये और यहाँ तीन ही दिन पश्चात् इस गुप्त पाप का उदय होने से पति-पत्नि दोनों के शरीर में गलित कुष्ट हो गया जिससे वे अत्यन्त दुःखी हुए और कष्ट से दिन बिताने लगे।

एक दिन भाग्योदय से संघसहित श्रीभद्र नामक दिगम्बर जैन मुनि उज्जैन के उद्यान में पधारे। नगर के लोग वंदना को गए और ईश्वरचंद्र भी अपनी पत्नी/भार्या के साथ वंदना को गए। वहाँ भक्तिपूर्वक नमस्कार कर बैठकर धर्मोपदेश सुने। पश्चात् पूछने लगे- कि हे दयालु मुनिवर ! हमारे कौन से पाप का उदय आया है कि जिससे हम दोनों पति-पत्नी को यह व्यथा उत्पन्न हुई है? तब मुनिराज ने कहा कि-

तुमने पात्रदान के लोभ से गुप्त कपट कर ऋतुमती होने की अवस्था में भी मन-वचन-काय की शुद्धि बोलकर अतिमुक्तक स्वामी को आहार दिया था अर्थात् तुमने अपवित्रता को भी पवित्रता बताकर चारित्र का अपवाद किया था। इसी पाप के कारण तुम्हारे यह असातावेदनीय कर्म का उदय आया है।

यह सुनकर उक्त दम्पत्ति (सेठ-सेठानी) ने अपने उस कृत्य पर बहुत पश्चात्ताप किया और पूछा-

भो यतिराज! अब इस पाप से मुक्त होने का कोई उपाय बताइए। तब गुरुरूप श्री मुनि महाराज ने कहा- कि हे भद्र! सुनो, भादों वदी षष्ठी को चारों प्रकार के आहार का त्याग कर उपवास धारण करो। श्री चंद्रप्रभ

भगवान का अभिषेक कर, अष्टद्रव्य से छह पूजन (विधान) करो, १०८ बार णमोकार मंत्र का जाप करो, चार संघ को चार प्रकार का दान देओ, तीनों काल सामायिक करो। उपवास के दिन और रात्रिभर आठ पहर तथा धारणा और पारणा के दिन चार पहर ऐसे सोलह पहरों तक घर में आरम्भ, इन्द्रियविषयों व कषायों का त्याग करो। इस प्रकार छह वर्ष तक यह व्रत करो पश्चात् उद्यापन करो। जहाँ जैन मंदिर नहीं हो वहाँ जिनालय बनवाओ छह जिनबिम्ब विराजमान करवाओ, छह जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार करवाओ, छह शास्त्रों का प्रकाशन/वितरण करो, सब प्रकार के ६-६ उपकरण मंदिरों में चढ़ाओ, छह छात्रों को भोजन करवाओ। चार प्रकार के (आहार, औषध, शास्त्र और अभय) दान देओ।

इस प्रकार व्रत की विधि सुनकर मुनिराज की साक्षीपूर्वक दम्पत्ति ने व्रत ग्रहण करके विधिसहित पालन किया। कुछ दिन में अशुभकर्म की निर्जरा होने से उनका शरीर बिल्कुल निरोग (स्वस्थ) हो गया और आयु के अन्त में संन्यासमरण कर वे दम्पत्ति स्वर्ग में रत्नचूल और रत्नमाला नामक देव-देवी हुए। जो बहुत काल तक सुख भोगकर और नन्दीश्वर आदि अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा कर कालयापन करते रहे।

अन्त में आयु पूर्णकर वहाँ से चयकर तुम राजा हुए हो और वह रत्नमाला देवी तुम्हारी पट्टरानी पद्मिनी हुई है। परस्पर तुम दोनों का पूर्वभवों का सम्बन्ध होने से ही विशेष प्रेम हुआ है। यह सुनकर राजा को भव-भोगों से वैराग्य उत्पन्न हो गया। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर मुनिदीक्षा ले ली और घोर तपश्चरण किया जिसके प्रभाव से थोड़े ही काल में केवलज्ञान प्राप्त करके वे सिद्धपद को प्राप्त हुए और रानी पद्मिनी के जीव ने भी दीक्षा ली। यह भी तप के प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ से चयकर मनुष्य-भव लेकर मोक्षपद प्राप्त करेगा।

इस प्रकार ईश्वरदत्त सेठ और चंदना ने इस चन्दनषष्ठी व्रत के प्रभाव से नर-सुर के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया और भी जो नर-नारी यह व्रत पालेंगे वे भी अवश्य उत्तम पद पावेंगे।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महिलाओं के इन्हीं अशुद्धियों के विषय जीवन में होते ही रहते हैं अगर ना भी हों तो ये चर्चा के विषय तो बनते ही रहते हैं क्योंकि यह विषय ही ऐसा है अतः यह विधान बर्ष में एक

बार ही नहीं बल्कि प्रत्येक माह में एक बार अवश्य ही करना चाहिए और रही बात छह बर्ष की, सो वह चन्दनषष्ठी की कथा के पति-पत्नी को प्रायश्चित्त का व्रत था जो आपका नहीं है अतः आप सभी श्रावक-श्राविकाओं को यह विधान प्रायश्चित्त विधान के रूप में प्रति माह अवश्य ही करना चाहिए और यह व्रत मात्र माताओं-बहनों का ही नहीं अपितु प्रत्येक जैन समाज के गृहस्थ का होना चाहिए और वह भी छह बर्ष की सीमा में बँधकर नहीं अपितु जीवन पर्यन्त, आजीवन। यह विचार व्यक्तिगत हमारा है।

आप बड़े-बड़े अनुष्ठान करें या न करें पर यह विधान आपको अवश्य ही करना चाहिए क्योंकि यह विधान विधान ही ना होकर आपका मासिक प्रतिक्रमण माना जाएगा। जैसे मुनियों का पाक्षिक प्रतिक्रमण होता है ऐसे ही श्रावकों को यह मासिक प्रतिक्रमण के रूप में विधान कर लेना चाहिए।

❑ ❑ ❑

रोहिणी विधान मंगलाचरण

(जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४

१. चौबीसी में प्रथम बालयति , वासुपूज्य जिन लाल।
जिनको सादर करके नमोस्तु, सब हों मालामाल॥
चंपापुर में जन्म लिए तो, राज्य प्रजा हुई दासी।
चढ़ी न हल्दी रची न मेहंदी, बन बैठे संन्यासी॥ ओम्...
२. बने सहेतुक वन में ज्ञानी, समवसरण सुखदायी।
पद्मासन से मोक्ष पधारे, वासुपूज्य जिनरायी॥
जयावती वसुपूज्य राज के, तुम संतान निराली।
भैंसा है पहचान आपकी, सबको दो खुशहाली॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
वासुपूज्य को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

रोहणी विधान प्रारम्भ

जय बोलिए देवों के देव, नाथों के नाथ, पूज्यों के पूज्य, महापूज्य, सर्वपूज्य, विश्वपूज्य, जगत्-पूज्य, त्रिलोक पूज्य, आत्म पूज्य, परमपूज्य श्री वासुपूज्य भगवान् की जय॥

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हम में, नाथ! आपको बुला सकें।
करें महोत्सव भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जाएगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोश हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मदहोश।
छींटा मारो ज्ञान का, आए हमको होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आए, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥
अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

कितना हमने सहन किया प्रभु, कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आए, अब तो तपा नहीं जाता।
राग-द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वन्दन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥
काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ्य हुए सिद्धालय में।
भूख-प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुए तेरी जय में॥
क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पाएँ परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥

ज्ञान-सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाए बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥
दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन-गृह में आतम की, सोन-चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
''पुण्य फला अरिहंता'' से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त-वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट-कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्टद्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा-सदा॥
आत्म-द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥
तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनन्त चौदस साथ।
चम्पापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

विधान अर्घ्यावली

(जोगीरासा)

१. खाद्य आहार दोष निवारक

रोटी सब्जी पुड़ी पराठे, पदार्थ खाने वाले।
वही खाद्य आहार जानिए, मुनि को देने वाले॥
खाद्य दोष सब दूर करें हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं खाद्य आहार दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. स्वाद्य आहार दोष निवारक

नमक मसाले खट्टा-मीठा, स्वाद बढ़ाने वाले।
वही स्वाद्य आहार जानिए, मुनि को देने वाले॥
स्वाद्य दोष सब दूर करें हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं स्वाद्य आहार दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. लेह्य आहार दोष निवारक

रबड़ी चटनी पदार्थ आदिक, रहे चाटने वाले।
वही लेह्य आहार जानिए, मुनि को देने वाले॥
लेह्य दोष सब दूर करें हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं लेह्य आहार दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. पेय आहार दोष निवारक

द्रव्य दूध पानी आदिक जो, पदार्थ पीने वाले।
वही पेय आहार जानिए, मुनि को देने वाले॥
पेय दोष सब दूर करें हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पेय आहार दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. नवधा भक्ति दोष निवारक

जो आहार दिए जाते हैं, नवधा भक्ति द्वारा।
उसमें लगे सभी दोषों से, कष्ट हुआ जो न्यारा॥
भक्ति दोष सब दूर करें हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं नवधा भक्ति आहार दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. दातागुण आहार दोष निवारक

दाता अपने दान गुणों से, जो भी दान प्रदाता।
मोक्षमार्ग का वह संचालक, सारे पाप नशाता॥
दान दोष सब दूर करें हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दाता गुण आहार दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

७. वृत्ति दोष निवारक

पाँच वृत्तियों से मुनिवर जी, अपना धर्म निभाते।
ले आहार तपस्या करते, मोक्षमार्ग चमकाते॥
वृत्ति दोष सब दूर करें हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आहार वृत्ति दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

८. औषधि दान दोष निवारक

व्रतियों को आहार दान में, जो भी औषध दी हो।
उसमें कमी रही हो कुछ भी, या कुछ गलती की हो॥
औषध दूषण दूर करें सब, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं औषध दान दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

९. शास्त्र दान आहार दोष निवारक

पाप व्यसन अज्ञान मिटाने, शास्त्र दान जो होता।
रोग शोक दुख दर्द दूर कर, कर्मों को वो खोता॥
शास्त्र दोष के दोष हरे हम, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं शास्त्र दान दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१०. अभय दान दोष निवारक

दया अहिंसा धर्म पालने, अभय दान जो होता।
वह निर्दोष बनाने हेतु, हृदय हुआ दुख खोता॥
अभय दान के दोष हरें सब, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अभय दान दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

११. आहार दान दोष निवारक

जो आहार दान में हमसे, दोष हुए हों स्वामी।
उनसे त्याग तपस्या कुछ, कमी रही दुख दानी॥
हरें दोष आहार दान के, करें रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आहार दान दोष निवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१२. पंचाश्चर्य प्रदाता

जब आहार दान होता है, तीर्थकर प्रभुओं का।
पंच-पंच आश्चर्य प्रकट हों, धन्य भाग्य भक्तों का॥
मिले पुण्य आहार दान का करें, रोहणी आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पंचाश्चर्य प्रदाता श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(शंभु)

सम्मान अर्चना मुनियों की, करने से यश धन स्वास्थ्य मिलें।
मुनि निंदा आलोचन करके, अपमान रोग दुख कष्ट मिलें॥
इसलिए सुखों के अभिलाषी, व्रत कथा रोहणी कर आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय, शांतिं-शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा॥

(दोहा)

मुनि-सेवा आहार में, लगने वाले दोष।
कर नमोस्तु सब हों क्षमा, करें धर्म जयघोष॥

ॐ ह्रीं रोहणी व्रत अधिष्ठाता सर्व विघ्नहर्त्ता सुख शांति प्रदाता श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः

जयमाला

(दोहा)

वासुपूज्य प्रभ को नमूँ, पाप समापन काज।
कहूँ रोहणी व्रत कथा, करके नमोस्तु आज॥

(ज्ञानोदय)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, कुरुजांगल इक देश रहा।
हस्तिनागपुर नगर उसी में, विगतशोक नृप राज्य रहा॥
विद्युतप्रभा उसी की रानी, पुत्र अशोक रहा उनका।
हुआ रोहणी अंग देश की, कन्या से विवाह उसका॥ १॥
विगतशोक ने शोक रहित हो, उल्कापात देखकर के ।
राज्य अशोक पुत्र को देकर, मोक्ष गए मुनि बनकर के॥
हुए अशोक रोहणी के फिर, नौ-नौ पुत्र पुत्रियाँ चार।
ऐसा अशोक राजा का था, धार्मिक और सुखी संसार॥२॥
एक दिवस अशोक राजा ने, लोकपाल अंतिम सुत को।
उच्च महल से नीचे फेंका, गिरा अशोक वृक्ष पर जो ॥
वहाँ देवियों ने बालक को, सिंहासन पर बैठाकर।
किया क्षीरसागर के जल से, शुभ अभिषेक महोत्सव कर॥३॥
हुआ रोहणी के प्रभाव से, यह आश्चर्य पुण्य पाए।
हस्तिनागपुर अशोक वन में, दो चारण मुनि तब आए॥
उन मुनिवर ने दुर्गंधा की, कथा-कहानी कह डाली।
श्रीषेण ने दुर्गंधा से, किया ब्याह माला डाली॥४॥
ज्यों-त्यों कर मुँह नाक बंद कर, उसने रात गुजारी थी।
दुर्गंधा को छोड भागने, पकड़ी सुबह सवारी थी॥
दुखी-दुखी दुर्गंधा ने तब, कारण पूंछा इस दुख का।
तब मुनि बोले पिछले भव में, समाधिगुप्त श्री मुनिवर का॥५॥

कर अपमान जहर दे मारा, तो मुनिवर जी स्वर्ग गए।
तब तो सिन्धुमति जी तुझको, कुष्ट हुआ भव बिग? गए॥
सप्तम नरक गयी वह सिन्धु, यहाँ बनी फिर दुर्गंधा।
फिर उपचार पूछकर मुनि से, करे रोहणी दुर्गंधा ॥६॥
जब नक्षत्र रोहणी हो तो, पाँच वर्ष उपवास करें।
सढ़सठ कुल उपवास करें वा, शास्त्र रोहणी दान करें॥
वासुपूज्य की भव्य अर्चना, करके जो व्रत पूर्ण करे॥
वह नर नारी फिर तो क्रम से, बने केवली मोक्ष वरे ॥७॥
यह व्रत पाँच वर्ष तक करके, फिर उद्यापन भी करना।
चार तरह का द्रव्य दान दे, श्रद्धा पूर्वक व्रत करना॥
दुर्गंधा ने व्रत पालन कर, किया समाधि मरण प्यारा।
देव बनीं फिर अशोक राजा, बनकर राज्य किया न्यारा॥८॥
मुनि से सुनकर कथा स्वयं की, राजा को वैराग्य हुआ।
वासुपूज्य के समवसरण में, मुनि बनकर कल्याण हुआ।
मोक्ष रोहणी भी जाएगी, सुनो रोहणी व्रत करते।
विद्या के सुव्रत सुख पाएँ, शीघ्र रोहणी व्रत करके॥९॥

(दोहा)

पूज्य रोहणी व्रत करें, ऋद्धि-सिद्धि सुख दान।
अतः करें हम प्रार्थना हो जग का कल्याण॥

ॐ ह्रीं रोहणीव्रत अधिष्ठाता सर्वविघ्नहर्ता सुख-शांतिप्रदाता श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

रविव्रत विधान

जय बोलिए खलु चिच्चदेव अरिहन्तदेव, देवों के देव, देवाधिदेव, उपसर्गों के विजेता, मोक्षमार्ग के नेता, परम धैर्यधारी, चैतन्य चमत्कारी, चिंतामणि, परम पारसमणि, अंतरिक्ष निवासी, घट-घट के वासी, परम यशवान्, साक्षात् मूर्तिमान्, निराकुल चित्त, परम पवित्र, परमपूज्य श्री पार्श्वनाथ भगवान् की जय॥

रविव्रत विधान मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४

१. चार-चार पुरुषार्थ करें जो, वो तीर्थंकर ज्ञानी।
पंच बालयति हुए उन्हीं में, पारस अंतर्यामी॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेहँदी, सचमुच ये तो हीरा।
जय चैतन्य चमत्कारी जो, बन बैठे भव तीरा॥ ओम्...

२. काशी जी के अश्वसेन व, वामाजी के नंदन।
याद पूर्वभव कर वैरागे, ध्यान किए फिर भगवन॥
समवसरण से धर्म सिखाकर, मोक्षसप्तमी पाए।
स्वर्णभद्र सम्मेदशिखर को भजने 'सुव्रत' आए॥ ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
पार्श्वनाथ को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

पारसनाथ जिनेश को, हो नमोस्तु नत शीश।
रविव्रत की पूजा करें, पाने प्रभु आशीष॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ, उपसर्ग निवारक पार्श्वनाथ।
जो तुम्हें पूजते श्रद्धा से, वे मोक्षमहल के बनें नाथ॥
हम रविव्रत की पूजा करने, मन आंगन आज बुहार रहे।
अखियों से नाथ प्रवेश करें, नत हो कर जोड़ पुकार रहे॥

(दोहा)

इस अपार संसार में, पार्श्वनाथ शरणार्थ।
इच्छा पूरण कीजिये, सफल करें पुरुषार्थ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(जोगीरस)

क्षमा नीर पीकर प्रभु पारस, कषाय मल को धोएँ।
जन्म मरण से ना घबराएँ, तो संकट दुख खोएँ॥
इन संसार दुखों से बचके, ऋद्धि-सिद्धि सुख चाहें।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कमठ क्रोध से जले जलाए, पर पारस बन ध्यानी।
समता का साम्राज्य लुटाए, कमठ हो गया पानी॥
राग द्वेष संताप मिटाने, चेतन चंदन चाहें।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अक्षयपद के अभिलाषी का, क्या कर लें बाधाएँ।
किन्तु स्वयं शर्मिंदा होकर, चरणों में झुक जाएँ॥
संकट में पथ धैर्य न छोड़ें, हम पारस बन जाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कमठ करे उपसर्ग पार्श्व पर, चट्टानें बरसाए।
पर फूलों सी उन्हें लगें जो, आतम ध्यान लगाए॥
बंजर धरती कर उपजाऊ , ब्रह्म पुष्प महकाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पारस का पा-रस हो जाते, बंजर कमठ रसीले।
आतम के रसिया बन जाते, क्यों न हुए हम गीले॥
भव-तृष्णा की भूख मिटाने, हम नैवेद्य चढ़ाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अंधेरे में फिर-फिर के, बना कमठ अज्ञानी।
रत्नत्रय का दीप जला के, पार्श्व बने निज ज्ञानी॥
केवलज्ञान प्रकाशी बनने, घी के दीप जलाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

द्वेष भाव से धूँ-धूँ जल के, कमठ करे उपसर्गा।
कर्मोदय को सहकर पारस, जीत लिए उपसर्गा॥
प्रभु सम कर्मविजेता बनने, खेकर धूप चढ़ाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पारसमणि को छूकर लोहे, सोने के बन जाते।
पर पारस को छू श्रद्धालु, खुद पारस बन जाते॥
हमें भक्ति का फल यह देना, दुख संकट सह जाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कमठ देखकर पारस प्रभु की, वीतराग मुद्रा को।
राग-द्वेष भूला हम धारें, वीतराग मुद्रा को॥
अर्घ्य चढ़ा वरदान मिले ये, यही भावना भाएँ।
पारस प्रभु को करके नमोस्तु, रविव्रत पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रीं रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तज प्राणत सुर धाम।
वामा माँ के गर्भ में, वसे पार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां तपमङ्गलमण्डिताय रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

विधान अर्घ्यावली

(सखी)

सम्यग्दर्शन की निंदा, कर कौन रहेगा जिंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ १॥

सम्यग्ज्ञानों की निंदा, सुन सके न कोई मुनिंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ २॥

सम्यक्चारित की निंदा, यह कहें न ठीक जिनंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र महाव्रत रूप निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रायअर्घ्यं...॥ ३॥

कर बारह व्रत की निंदा, दारिद्र करे हर धंधा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र अणुव्रत रूप निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायअर्घ्यं...॥ ४॥

करके रविव्रत की निंदा, सुख शांति धर्म हो गंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं रविव्रत रूप निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायअर्घ्यं...॥ ५॥

नवदेवता निंदा-त्याग सम्बन्धी अर्घ्य

(सखी)

प्रभु अरिहंतों की निंदा, दे दुख दारिद्र दरिंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं अरिहंत देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

जो निंदा सिद्ध जिनों की, वह क्रिया कष्ट पंथों की।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं सिद्ध देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

आचार्य श्री की निंदा, कर सुखी रहे ना बंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं आचार्य देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

गुरु उपाध्याय की निंदा, दे चिंता चिता दरिंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं उपाध्याय देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

निंदा मुनि साधु जनों की, दे यात्रा भव भ्रमणों की।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं साधु देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥

जिन धर्म गुणों की निंदा, करती जिनशासन गंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं जिनधर्म देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥

जो करें जिनागम निंदा, वे पाएँ भव दुख फंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं जिनागम देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥

जिन चैत्य बिंब की निंदा, नित हरे आत्म आनंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं जिनचैत्य देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥

कर चैत्यालय की निंदा, ना झलके परमानंदा।
सो निंदा त्यागो जल्दी, पारस दें सुख समृद्धि॥

ॐ ह्रीं चैत्यालय देव निंदा दोष निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

दस भव वर्णन

(विष्णु)

पहले भव में पार्श्वनाथ जब, मरूभूति बनते।
कमठ करे उपसर्ग तभी तो, मरूभूति मरते॥
पार्श्व भाई के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं भ्रातृ-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

दूजे भव में पार्श्वनाथ का, जीव बना हाथी।
कमठ साँप जहरीला बनकर, मार दिया हाथी॥
पार्श्व पशू के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

हाथी मरकर तीजे भव में, सीधे स्वर्ग गया।
जीव कमठ का सांप मरा तो, नीचे नरक गया॥
पार्श्व जहर के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जहर-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

देव तिलकपुर किरणवेग बन, संत रूप धारे।
मरा नारकी साँप बना फिर, बिष से मुनि मारे॥
पार्श्व वेदना उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वेदना-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

देव मरण कर पंचम भव में, देव बना सुखिया।
सांप नरक छठवें में पहुँचा, बन बैठा दुखिया॥
पार्श्व कर्म के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कर्म-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥

देव बना फिर वज्रनाभ नृप, मुनि दीक्षा फिर ली।
मरा नारकी भील बना फिर, मुनि हत्या कर दी॥
पार्श्व शत्रु के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं शत्रु-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

मुनि समाधि कर ग्रैवेयक में, वे अहमिन्द्र हुए।
भील सातवें नरक गया फिर, दुख के धाम छुए॥
पार्श्व दुखों के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दुःख-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२१॥

देव कनकबाहु राजा बन, मुनि दीक्षा लेता।
कमठ आठवें भव में सिंह बन, मुनि को खा लेता॥
पार्श्व संत के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सहधर्मी-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२२॥

नौवें भव में पार्श्व जीव ने, देव रूप में ही।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधा, सुख स्वरूप में ही॥
पार्श्व स्वयं के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आत्म-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२३॥

दसवें भव में अश्वसेन वा, वामा के नंदन।
तीर्थंकर काशी में जन्मे, पार्श्वनाथ भगवन॥
जन्म-जन्म के उपसर्गों को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जन्मोजन्म-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२४॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगितिका)

नव देवता के रूप में जो, धर्म की निंदा करें।
दारिद्र दुख मिलते उन्हें, चैतन्य वो गंदा करें॥
हर भूल 'सुव्रत' हो क्षमा, करके रविव्रत अर्चना।
दें ऋद्धि-सिद्धि पार्श्व भगवन, है नमोस्तु प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं विश्व-कृतोपसर्ग निवारक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत-विधायक श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

काशी के मतिसागर नामक, सेठ और सेठानी के।
सात पुत्र में छह वैवाहिक, अंतिम पुत्र कुँवारे थे॥
तब तो गुणसागर जी मुनिवर, काशी नगर पधारे थे।
उनसे ही सेठानी जी ने, रविव्रत व्रत स्वीकारे थे॥१॥
यह व्रत लेकर सेठानी जब, घर पहुँची तो घरवाले।
किए बहुत निंदा इस व्रत की, जिसको हम कहने वाले॥
व्रत निंदा के फल से जब सब, लगे भूख से करने को।
तब तो सातों पुत्र अयोध्या, गए नौकरी करने को॥२॥
इधर बनारस अवधिज्ञानी, मुनिवर के आ जाने से।
सेठ और सेठानी पूछे, क्या कारण दुख आने के॥
मुनि बोले रविव्रत निंदा से, दुख दरिद्र तुम सब पाए।
सो मुनि निर्देशन से रविव्रत, कर सुख समृद्धि पाए॥३॥
उधर अयोध्या में सातों सुत, करें नौकरी पेट भरें।
किंतु एक दिन अंतिम सुत जब, घास काट कर गमन करें॥

तब तो हंसिया है वहीं भूल कर, ज्यों ही घर वापस आया।
तो भाभी ने दिया न भोजन, हंसिया वापिस मँगवाया॥४॥
हंसिया वापिस लेने जैसे, जंगल को प्रस्थान किया।
दिखा साँप हंसिया में लिपटा, तो पारस का ध्यान किया॥
तब धरणेन्द्र देव ने जाना, पारस का सेवक दुखिया।
सो आज्ञा दी पद्मावति को, जाओ करो भक्त सुखिया॥५॥
पद्मावति ने शीघ्र पहुँचकर, उसको भय से मुक्त किया।
उसे दिया सोने का हंसिया, रत्नहार भी उसे दिया॥
पार्श्वनाथ का रत्न बिम्ब भी, उसको दे वापिस भेजा।
इसे देखकर घरवाले सब, किए प्रशंसा की सेवा॥६॥
कुछ दिन बाद हुए सब सुखिया, सो जिनमंदिर बनवाए।
जिनशासन की ध्वज फहराई, किए पाप पर पछताए॥
इस विध रविव्रत के प्रभाव से, धन समृद्धि प्राप्त किए।
अंतिम पुत्र तीसरे भव में, मोक्ष गए सुख प्राप्त किए॥७॥
इस विध नों वर्षों तक रविव्रत, करके पारसनाथ भजें।
फिर उद्यापन करके अपनी, शुद्धातम का साज सजें॥
ऋद्धि-सिद्धि सुख शांति मिलेगी, भव का चक्र मिटेगा रे।
पारस का सोना बरसेगा, सुव्रत भाग्य सजेगा रे॥८॥

(दोहा)

रविव्रत की पूजा करे, दुख दरिद्रता दूर।
धन संपत्ति घर भरे, निज सुख दे भरपूर॥

ॐ ह्रीं सकल दुख दरिद्रता विनाशक सुख-समृद्धि प्रदायक रविव्रत विधायक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय ॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

आरती—श्री पार्श्वनाथ स्वामी

(लय : टन टना टन...)

झालर घंटी देख आरती, हम तो नाचें रे।
हम क्या नाचें बाबा सारी दुनियाँ नाचे रे।
झूम-झूम-झूम, झूम-झूम सारी दुनियाँ नाचे रे॥
भक्तों को भगवान् मिले हैं, प्यारे पारसनाथ।
जिनकी भक्ति करने सबका, झुक जाता है माथ।
ढोल मंजीरा ताली बाजे[२], घुँघरू बाजे रे॥
हम क्या नाचें...॥ १॥
तुमने सारी दुनियाँ त्यागी, त्यागे कौन तुम्हें।
तभी शरण में हम आए हैं, देखो नाथ हमें।
सूरज चाँद सुरासुर तेरे[२], यश को बाँचें रे॥
हम क्या नाचें...॥ २॥
अश्वसेन वामा के नन्दन, बालयति परमेश।
दुख संकट उपसर्गविजेता, धरे दिगम्बर भेष।
आतम परमातम के रसिया[२], तुम ही साँचे रे॥
हम क्या नाचें...॥ ३॥
मुँह माँगा वरदान मिला है, जिन श्रद्धालु को।
तुमसे तुमको माँग रहे हम, दान दयालु दो।
'सुव्रत' की झोली भर दो बिन[२], परखे जाँचे रे॥
हम क्या नाचें...॥ ४॥

❑ ❑ ❑

गुरु मार्ग में
पीछे की हवा सम
हमें चलाते

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥

बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

❑ ❑ ❑